

4.1 परिचय (Introduction)

अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट जर्मनी के तीन महान भूगोलवेत्ताओं-हम्बोल्ट, रिटर और रेटजेल-में से एक हैं, जिन्होंने भूगोल को विज्ञान के रूप में विकसित करने का महान कार्य किया है। इसी कारण इन्हें 'आधुनिक वैज्ञानिक भूगोल का जन्मदाता या पितामह' माना गया है। इनका समय 'भौगोलिक विचारधारा का शास्त्रीय युग' (Classical period of Geographical Thought) कहलाता है, जिसके बाद भूगोल का 'वर्तमान युग' (बीसवीं शताब्दी में) शुरू हुआ। ये बहुत विद्वान एवं प्रतिभाशाली थे तथा प्रतिष्ठित शास्त्रीय भूगोल (Classical Geography) के प्रतिपादन एवं विज्ञान की अनेक शाखाओं के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान इन्होंने दिया।



चित्र-1 : हम्बोल्ट
(1769-1859)

4.2 हम्बोल्ट का प्रारंभिक जीवन एवं शिक्षा (Humboldt's early life and education)

बैरन फ्रेडरिक विलहेम कार्ल हेनरीफ अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट का जन्म प्रुशिया (Pursia_Now Germany) के एक कुलीन परिवार ने 1769 ई० में बर्लिन शहर में हुआ। मात्र 10 वर्ष की उम्र में ही पिता का देहांत हो जाने से इनकी माँ ने इनका पालन-पोषण किया। 18 वर्ष तक प्राइवेट स्कूल में पढ़ने के बाद इन्होंने फ्रैंकफर्ट (Frankfurt) विश्वविद्यालय और फिर छह माह बाद गॉटिंगन (Göttingen) विश्वविद्यालय (जर्मनी के प्रमुख विश्वविद्यालयों में से एक) में अध्ययन किया। यहाँ उन्होंने वनस्पति विज्ञान, खनिज एवं भू-विज्ञान विषयों में विशेष अध्ययन किया। इसके बाद इन्होंने फ्रैबर्ग (Friburg-Saxony) ने शिक्षा प्राप्त की, जहाँ वे विख्यात भू-विज्ञानवेत्ता ए० जी० वार्नर (A.G. Warner) के शिष्य रहे। यहाँ उन्होंने अपनी पहली फील्डयात्रा राइन के बेसाल्ट के अध्ययन के लिए की तथा उसके आधार पर अपना पहला प्रकाशन 'A detailed study on the Basalt deposits near Anstell on the Rhine' निकाला और अपने गुरु एवं मार्गदर्शक जॉर्ज फ्रॉस्टर (George Forster) के नाम समर्पित कर दिया।

बीस वर्ष की आयु में ही इन्होंने इंग्लैंड, हालैण्ड, बेल्जियम और उत्तरी फ्रांस की यात्रा कर उसके अनुभवों को 'निम्न राइन के प्रदेशों की संक्षिप्त व्याख्या' नामक लेख में वर्णित किया। पढ़ाई खत्म होने के बाद इनकी नियुक्ति 1791 ई० में खनिज विभाग ने खनन भू-वैज्ञानिक (Mining geologist) के रूप में हुई, जिसका फायदा उठाते हुए इन्होंने दक्षिणी जर्मनी की विस्तृत यात्रा की। इस दौरान वे प्रसिद्ध भूगोल एवं भू-विज्ञानवेत्ता गोथे व श्लूटर के संपर्क में भी आए। इस यात्रा से इनकी रूचि वनस्पति एवं मौसम विज्ञान में बढ़ी। 1797 ई० में अपनी माँ की मृत्यु के पश्चात् इन्होंने राजकीय सेवा का पद त्याग दिया और नई यात्राओं, अन्वेषणों एवं खोजों में लग गए।

4.3 हम्बोल्ट की यात्राएँ एवं खोजे (Journeys and Discoveries of Humboldt)

साहसिक अभियानों एवं खोजों के युग में पलने-बढ़ने के कारण अन्तर्मुखी और स्वप्नद्रष्टा हम्बोल्ट की रूचि शुरू से ही नई-नई जगहों की यात्राएँ करने में रहीं। जॉर्ज फ्रॉस्टर के साथ इन्होंने

पश्चिमी यूरोप की यात्रा की, जिनकी भौगोलिक प्रेक्षण (observation) की विधि और दृश्य भूमियों के वैज्ञानिक वर्णन की क्षमता का गहरा प्रभाव हम्बोल्ट पर पड़ा।

खनन विभाग की नौकरी त्यागने के बाद 1798 में वे जर्मनी से मैड्रिक (Madrid-Spain) अपने दोस्त वनस्पति वैज्ञानिक ए० बोलपलैण्ड (A. Bolpland) के साथ पहुँचे। रास्ते में उन्होंने कई स्थानों की ऊँचाई (समुद्रतल से) तापमान और वायुदाब मापा। स्पेन के पर्वतों के मापने वाले पहले व्यक्ति हुए। स्पेन के उपनिवेशों के भ्रमण के लिए शाही अनुमति लेने के बाद 4 जून 1799 को दक्षिणी अमेरिका के लिए निकल पड़े। काराकास के आसपास के क्षेत्र बनेजुएला (Venezuela) में इन्होंने कई जीव-जंतुओं, पेड़-पौधों की नई प्रजातियों के साथ-साथ ओरिनिको नदी के उद्गम मार्ग की भी खोज स्थानीय लोगों की मदद से की। फिर उन्होंने दक्षिणी अमेरिका के उत्तरी भागों का पूर्व से पश्चिमी तट तक, अमेजन बेसिन से एण्डीज पर्वतमाला के शिखर तक, लानोस के घास के मैदान का तथा अमेजन के घने और उष्ण वनों से गुजरते हुए क्यूबा तक का भ्रमण किया। क्यूबा की अर्थव्यवस्था और समाज का अध्ययन करने के बाद वे कोलम्बिया के कार्टिजेना भी गए। इन यात्राओं में इन्होंने षट्कोण, दूरबीन, साइनोमीटर, बैरोमीटर आदि वैज्ञानिक उपकरणों की मदद से विभिन्न स्थानों का क्रमबद्ध रूप से रेखांश और अक्षांश, उन्नतांश (Altitude) और तापमाप को मापकर रिकॉर्ड किया।

उन दोनों ने फसलों के उत्पादन पर पड़ने वाले जलवायु विज्ञान और जीव-जंतुओं के प्रभाव का भी अध्ययन किया। एण्डीज का एक उत्कृष्ट वनस्पति वितरण मानचित्र तैयार किया, जिससे उन्हें 'उच्चता संबंधी वर्गीकरण (Altitudinalzonation) की अवधारणा का आधार तैयार करने में मदद मिली। एण्डीज विशेषकर इक्वाडोर की बहूत सारी ज्वालामुखियों की खोज के बाद लीमा पेरू होते हुए मेक्सिको गए तथा वहाँ के विभिन्न भागों में सांस्कृतिक भूपटलों पर भू-आकृतियों के प्रभाव का अध्ययन किया।

1804 में वे संयुक्त राज्य अमेरिका गए तथा पनामा नहर निर्माण के फायदे और हीरे-प्लैटिनम पाए जानेवाले विशेष प्रकार की भू-संरचनाओं के बारे में बताया, जो बाद में जार्जिया, उत्तरी कैरोलीना, वर्जिनिया और कैलिफोर्निया में मौजूद पाई गई। वहाँ से वे वापस यूरोप लौट गए जहाँ 1806 में इटली के विसुवियस ज्वालामुखी विस्फोट देखने के बाद वे लंबे समय तक अपने अनुभवों का दस्तावेज तैयार करने में जुटे रहे। इन्होंने फ्रेंच भाषा में भी अपने अनुभवों को 30 खण्डों में लिखा। वे उस समय तक विद्वानों के बीच काफी प्रसिद्ध हो चुके थे।

1829 में रूसी जार के निमंत्रण पर लेनिनवाद, फिर यूराल पर्वत और मध्य एशिया के पहाड़ों से होकर कैस्पियन सागर, फिर मंगोलिया के रहस्यमयी प्रदेशों की यात्रा की। वहाँ तापमान-संबंधी विश्व का पहला मानचित्र तैयार किया तथा इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि समताप रेखा किसी अक्षांश (रेखांश) के अनुरूप नहीं होती। यह उनके महाद्वीपीय सिद्धांत, महाद्वीपीय अंतः प्रदेशों में अत्यधिक मौसमी ठंड या गर्मी पड़ने के सिद्धांत और तटवर्ती क्षेत्रों में पूरे वर्ष भर शीतोष्ण तापमान रहने के सिद्धांत का आधार था। इस निष्कर्ष ने उन्हें भूगोल के उच्चतम स्थान पर पहुँचा दिया तथा 'मौसम विज्ञान' शब्द को भूगोल की पुस्तकों में शामिल किया गया। 1845 में इन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'कॉसमॉस' (Cosmos) प्रकाशित की, जिसमें ब्रह्माण्ड (waivers) संबंधित ज्ञात भौतिक भूगोल के प्रत्येक पहलू को शामिल किया। इन्होंने एक नया शब्द 'Cosmography' निकाला, जिसका अर्थ है विश्व का भौतिक वर्णन। Cosmography को दो भागों- 'यूरानोग्राफी' (Uranography) और 'ज्योग्राफी' (Geography) में बाँटा। Geography को उन्होंने

जर्मन शब्द 'एर्डकुण्डे' (Erdkunde) के रूप में परिभाषित किया, जिसका अर्थ है-पृथ्वी का विज्ञान या सामान्य रूप में भौतिक भूगोल। इसी शब्द को रिटर ने लेकर अपना प्रसिद्ध ग्रंथ लिखा।

इसके बाद हम्बोल्ड्ट को अपने पिता की भाँति प्रशिया के राजा चैंबरलेन की सेवा करने का अवसर मिला तथा उन्होंने अपना शेष जीवन जर्मनी में ही अपने अनुभवों को लिखने व बाँटने में बिताया। 90 वर्ष की आयु में 1859 ई० में उनकी मृत्यु हो गई।

4.4 भूगोल में देन (Contribution of Geography)

1.4.1 हम्बोल्ड्ट की रचनाएँ (Literary Works of Humboldt)

हम्बोल्ड्ट ने विविध विषयों पर विद्वतापूर्ण रचनाएँ लिखीं। भूगोल के साथ-साथ भू-विज्ञान, खनिज विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, ऋतु विज्ञान, साम्राज्य एवं राजनैतिक भूगोल पर भी विभिन्न रचनाएँ एवं लेख लिखने के कारण इन्हें 'बहुमुखी प्रतिभा का धनी' कहा गया। उनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं :-

- (i) 1789 - 'राइनलैण्ड बेसाल्ट' पर लिखा गया शोध ग्रन्थ।
- (ii) 1822 - नई दुनिया के स्पेनिश उपनिवेशों के विभिन्न पहलुओं पर लिखे गए राजनैतिक लेख।
- (iii) 1823 - 'दोनों गोलाद्धों की चट्टानों की विशिष्ट स्थिति पर भूवैज्ञानिक लेख।
- (iv) 1829 - 'Asia Centrale' दो खण्ड में फ्रेंच भाषा में रूसी सरकार के निवेदन पर यूराल एवं पश्चिमी साइबेरिया के खनिज संसाधन पर।
- (iv) नई दुनिया के भूमध्य रेखीय प्रदेशों की यात्रा पर विशेष 'आनुभाविक वर्णन'- 3 खण्ड में पेरिस से प्रकाशित।
- (vi) दक्षिण अमेरिका के मूल वंशजों (आदिवासियों), उनकी सामाजिक संस्थाओं, शिल्पों आदि पर दो खण्डों में पेरिस से प्रकाशित लेख।
- (vii) 1844 - 'प्रकृति दिग्दर्शन (Views on Nature)
- (viii) 1845-1862 के मध्य प्रकाशित - Cosmos ग्रन्थ।

ये सारे ग्रंथ फ्रेंच या जर्मन भाषा में लिखित हैं, जिनका बाद में अंग्रेजी एवं अन्य यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद किया गया।

1.4.2 हम्बोल्ड्ट और भूगोल (Humboldt and Geography)

भौतिक भूगोल (Physical Geography) : हम्बोल्ड्ट ने भूगोल की अन्य विज्ञानों के संदर्भ में तुलनात्मक परिभाषा दी। उनके अनुसार — "Geography is concerned with the study of nature all other systematic sciences whether natural or biotic are concerned with earth's phenomenon, studies the form, constitution and process of individual animals or plants, solid objects or fossils and arranges them in classes and families But geography is concerned with all these objects as they exist together related to each other, casually in an area."

उन्होंने ज्वालामुखी उत्पत्ति के कारण, क्षेत्र, प्रभाव एवं तीव्रता; ऋतु-विज्ञान में जलवायु तत्त्वों मौसम की दशाएँ एवं उनके बहुरूपी प्रभाव के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने वायुदाब एवं ऊँचाई में संबंध स्थापित किया तथा सर्वप्रथम समताप रेखा खींचने की विधि एवं उन्हें विश्व मानचित्र में प्रयुक्त करने

का सफल एवं व्यावहारिक स्वरूप ज्ञात किया। इन शब्दों का व्यवस्थित रूप से प्रयोग करनेवाले वे पहले विद्वान थे।

वनस्पति भूगोल (Plant Geography) :

लैटिन अमेरिका के भ्रमण के अनुभवों एवं संग्रहित सैंपलों के आधार पर उन्होंने व्यक्तिगत पौधों के लक्षणों को बताते हुए उन्हें विभिन्न समूहों में बाँटकर वनस्पति भूगोल को वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया। पौधों के विकास एवं वितरण का कारण मुख्यतः जलवायु को मानते हुए वनस्पति के विश्व वितरण की नींव रखी। इसलिए उन्हें वनस्पति विज्ञान के महान प्रणेता विद्वानों में से एक माना जाता है।

भूगोल में मानव का स्थान [Place of Man in Geography] :

हम्बोल्ट ने मानव सभ्यता एवं उसके द्वारा निर्मित तत्त्वों एवं उनके व्यवहार का अध्ययन प्रकृति के एक अंग के रूप में मानकर किया। कॉसमॉस में उन्होंने माना कि मानव के प्राकृतिक क्रियाओं एवं घटनाओं से हमेशा प्रभावित होने के कारण मानव समुदाय एवं प्रजाति के अध्ययन के बिना प्रकृति का वर्णन अधूरा है उनके अनुसार "Cosmography is the study of all, that has been created, including all that is in the area, a simultaneously existing reality." Cosmography के दो महत्वपूर्ण भाग Uranography (ब्रह्माण्ड वर्णन) और Geography (physical या भौतिक भूगोल) है। भूगोल का मुख्य उद्देश्य किसी क्षेत्र क बहुस्वरूपी विविधताओं में एकता को स्वीकार करना है। विभिन्न परिवर्तनों के मध्य घटनाओं की निरन्तरता एवं संयुक्तता का अध्ययन कर इस एकता को जाना जा सकता है। इस एकता को 'बहुलता में एकता' या 'एकता की विचारधारा' (Concept of Whole) के रूप में परिभाषित एवं प्रतिपादित किया। जिसका स्वरूप मानव के आसपास केंद्रित है। इसके अनुसार पृथ्वी एक जैविक एवं अविभाज्य इकाई (Inseparable organic whole) है जो विभिन्नता में भी एकता का प्रदर्शन करती है। अतः भौतिक भूगोल में धरातल के सभी बच्चों की एकरूपता को लक्षित किया जाना चाहिए। उनके अनुसार "भूमंडल पर सर्वत्र प्रकृति की संपूर्णता का प्रतिबिम्ब व्याप्त है।"

हम्बोल्ट के अनुसार भूगोलवेत्ता का प्रमुख लक्ष्य जैविक और अजैविक घटनाओं के बीच संबंध ढूँढ़ना है। अप्रत्यक्ष रूप में इन्होंने आधुनिक मान्यताओं के अनुसार 'Area association of natural and organic phenomena' के चिंतन की ओर अपना ध्यान बनाए रखा। उनकी यह धारणा भौतिक भूगोल के वर्णन में सभी जगह पूरी तरह स्पष्ट है।

निश्चयवादी चिंतन (Determination) :

मनुष्य पर प्रकृति का प्रभाव बहुरूपी और जटिल है जबकि प्राकृतिक घटनाओं एवं ऋतु-विज्ञान के तत्त्वों पर मनुष्य का कम प्रभाव पड़ता है। यह निश्चयवादी चिंतन (Determinism) है व अपने इस मत के कारण वे एक 'निश्चयवादी विचारक' (A Determinist) माने जाते हैं। उन्होंने प्राकृतिक प्रभाव को मानवीय सामंजस्य (Adjustment) में महत्वपूर्ण मानते हुए परिवेश के प्रभाव के साथ-साथ मानवीय चिंतन के विकसित स्तर के प्रभाव को भी स्वीकार किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि "..... influence exercised upon man by the forces of nature are reciprocal although he (man) in his turn exercises whether action on the natural forces." मानव एवं प्रकृति के बीच के संबंधों का अध्ययन भूगोल का प्रथम विषय है।

1.4.3 विधितंत्र एवं शोध विधियाँ [Methodology and Research Methods]

हम्बोल्ट द्वारा भौगोलिक अध्ययन के लिए अपनाए गए विधितंत्र के पाँच मुख्य पक्ष हैं :-

- (i) आनुभाविक आगमनिक विधि (Empirical Inductive Method) – विशिष्ट उदाहरण, प्रेक्षण (Observation), परीक्षण (Experimentation), यंत्रों के नवीनतम ज्ञान एवं प्रयोग के आधार पर भौतिक, सामाजिक और क्षेत्रीय परिवर्तनों को समझना चाहिए।
- (ii) क्रमबद्ध प्रणाली (Systematic Method) – भौतिकी, भू-विज्ञान, जीव विज्ञान जैसे क्रमबद्ध विज्ञानों की तरह वर्गीकरण रीति के द्वारा अध्ययन करना।
- (iii) तुलनात्मक विधि (Comparative Method) – परिघटनाओं और वितरणों के प्रेक्षणों, उदाहरणों और तथ्यों (facts) की तुलना करके निष्कर्ष निकालना।
- (iv) पूरी शुद्धता (Precision) – इसका प्रत्येक प्रक्रिया में सूक्ष्मता से पालन करना।
- (v) कार्टोग्राफिकल विधि (Cartographical Method) – इसके द्वारा मानचित्र और आरेखों आदि के लक्ष्यों का प्रदर्शन।

1.4.4 हम्बोल्ट द्वारा दी गई भूगोल की संकल्पनाएँ [Concepts of Geography given by Humboldt]

हम्बोल्ट द्वारा भूगोल को दी गई सात पक्षीय संकल्पना (seven aspected concept) निम्नलिखित हैं जिनके आधार पर भूगोल का विकास होता रहा है :-

(1) पृथ्वी तल की संकल्पना मानवीय विकास के रूप में (The concept of earth's surface as the home of man) :-

मानव पृथ्वी पर भूगोल का केन्द्रीय बिंदु है जिसके कारण मानव निवास या मानव के घर के रूप में भूगोल का अध्ययन किया जाता है। यह आज तक मान्य है।

(2) संसार के 'स्थानिक वितरणों' का विज्ञान (Science of spatial distribution of the world) :-

- (i) हम्बोल्ट के अनुसार "भूगोल संसार के 'क्षेत्रीय या स्थानिक वितरणों' का विज्ञान है।" भूगोल की इस मूलभूत संकल्पना के आधार पर भूगोल का विकास हुआ है, जो इसे अन्य क्रमबद्ध विज्ञानों में एक स्वतंत्र विषय के रूप में प्रतिस्थापित करती है।
- (ii) इसके अंतर्गत केवल प्राकृतिक या भौतिक तत्वों का ही नहीं; बल्कि संसार का अध्ययन होता है अर्थात् पृथ्वी तल का, जिस पर मानव का निवास है। इस तरह यह विश्व (cosmos) का विज्ञान है, जिस पर उन्होंने cosmos नामक ग्रन्थ भी लिखा है।

(3) सामान्य भूगोल का ही नाम भौतिक भूगोल है (General geography is physical geography) :-

हम्बोल्ट 'सामान्य भूगोल' के लिए 'भौतिक भूगोल' शब्द का प्रयोग करते रहे, जिसके अंतर्गत मानव के अध्ययन को भी शामिल किया गया। बाद में भौतिक भूगोल और मानव भूगोल दो शाखाएँ हो गईं, किन्तु हम्बोल्ट ने भौतिक भूगोल को मानव भूगोल के अधीन ही माना।

(4) भूगोल संबंधों का अध्ययन है (Geography is the study of 'realitions') :-

भूगोल का उद्देश्य पृथ्वी तल पर भौतिक और मानवीय संबंधों का अध्ययन एवं जैव-अजैव और मानव-प्रकृति के बीच संबंधों की विवेचना और व्याख्या करना है।

(5) सांसारिक परिघटनाओं की समझ (Comprehension of World phenomena) :-

सांसारिक परिघटनाओं के समाकलन (integration) के लिए जटिलता का सामना करना पड़ता है। अतः इसे समझने हेतु इसे कम जटिल खण्ड (partaise) समाकलनों में विभाजित करके उसका अध्ययन करना चाहिए। यह अनुसंधान का सबसे ऊँचा और सतत् उद्देश्य है।

(6) भूगोल में परिघटनाओं की विषमांगता (Heterogeneity of phenomena in Geography):-

हम्बोल्ट ने अन्य क्रमबद्ध विज्ञानों से भूगोल को अलग बताया, क्योंकि उनके विपरीत भूगोल में अध्ययन की जानेवाली परिघटनाओं में विषमांगता (heterogeneity) होती है।

(7) प्रकृति की एकता (Unity is Nature) :-

उनके अनुसार प्रकृति एक ऐसा समन्वय है जो सृष्टि की समस्त वस्तुओं, चाहे वे रूप या गुण में काफी असमान ही क्यों न हो, का परस्पर सम्मिश्रण कर एकता की स्थापना करती है। इसे 'एकता की संकल्पना' (unity concept) भी कहते हैं, जिसका अध्ययन भूगोल में किया जाता है।

विभिन्न यंत्रों का उपयोग (Use of Different Instruments) :-

हम्बोल्ट ने नई दुनिया के भ्रमण के दौरान 40 से भी अधिक प्रेक्षण-यंत्रों का प्रयोग किया, जिनमें उन्नत दूरबीन, कालमापी (Chronometer), सेक्सटेण्ट चतुर्थांश, चुम्बक, सायनोमीटर, वायुदाबमापी (Barometer), वर्षामापी (Rain gauge) एवं विभिन्न प्रकार के तापमापी आदि सम्मिलित हैं। इनके शुद्ध परिणाम पर ही हम्बोल्ट के अभिलेख, शोध व संकल्पनाएँ आधारित हैं जो आज भी सकारात्मक अध्ययन के आधार पर स्तंभ हैं।

1.4.5 कॉसमॉस की विषय-वस्तु और दर्शन (Theme and Philosophy of Cosmes) :-

1819 ई० में उन्होंने सर्वप्रथम फ्रेंच भाषा में 'Essai sur la physidue du monde' नाम से एक ग्रंथ लिखना शुरू किया, जिसका जर्मनी में 'कॉसमॉस' (Cosmos sketch of a physical description of the universe) नाम रखा। इसका दर्शन निम्न चार-स्तरीय विषय वस्तु पर आधारित है :-

- (i) भौतिक भूगोल को स्वतंत्र विज्ञान मानते हुए उसकी परिभाषा एवं सीमाएँ बताकर उसे वैज्ञानिक आधार प्रदान करना।
- (ii) वस्तुबोधक या व्यावहारिक विषयसूची में प्राकृतिक तथ्यों के अनुभव पर आधारित ब्यौरे प्रस्तुत किए गए।
- (iii) चिंतन, भावनाओं एवं क्रियाओं पर 'प्राकृतिक घटनाओं का प्रभाव'। इसके अतिरिक्त ज्ञानार्जन के लिए उत्सुकता, अनुभव एवं प्रेक्षण द्वारा भूदृश्यों का बुद्धिमत्तापूर्ण वर्णन।
- (iv) कॉसमॉस में प्राकृतिक दर्शन के सिद्धांत के उद्भव का इतिहास और उसकी जैविक एकरूपता।

उन्होंने अपने दर्शन के आधार पर 'पृथ्वी की एकता' को एक जैविक तथ्य के रूप में स्वीकार किया। वे शुरू से ही काण्ट के चिंतन से प्रभावित रहे, जिसकी भूलक Cosmos में भी मिलती है। उनपर वारेनियर, जॉर्ज फ्रॉस्टर और कार्ल रिटर के चिंतन का भी प्रभाव पड़ा। रिटर और वे एक-दूसरे के पूरक रहे।

4.5 निष्कर्ष (Summing-up)

हम्बोल्ट अपने काल के ऐसे अग्रणी विचारक रहे जिन्होंने एक अग्रद्रष्टा की भांति भूगोल का विकास किया। उनका चिंतन बहुमुखी, वास्तविक, व्यावहारिक एवं अधिक विस्तृत आधारयुक्त तथा उनकी रचनाएँ एवं विचार उत्कृष्ट कोटि के प्रत्येक समयानुकूल रहीं। उन्होंने व्यवस्थित भूगोल के अध्ययन में निहित उद्देश्यों को स्वीकार कर उसके व्यावहारिक (वर्णनात्मक भूगोल एवं प्रादेशिक व्याख्या का) नवीन युग प्रारंभ हुआ और भूगोल को वैज्ञानिक स्तर प्राप्त हुआ। इसी कारण उन्हें 'रिटर सहित वर्तमान भूगोल का जनक' माना जाता है।

प्राध्यापक पद एवं शिष्यों के अभाव तथा रिटर की तरह इनकी रचनाएँ भौगोलिक पत्रों एवं विभिन्न भौगोलिक विभागों से प्रकाशित न होने के कारण बहुत समय तक लोग इनके कार्यों से अनजान रहे। किंतु बीसवीं सदी के प्रारंभ में भूगोलवेत्ताओं का ध्यान इनकी रचनाओं की ओर गया, जिसने उन्हें भूगोलवेत्ताओं की अग्रिम पंक्ति में सामने लाकर खड़ा किया। भूगोल में उनकी देन अमूल्य है और आज भी महत्त्वपूर्ण है।

4.6 व्यवहृत शब्दावली (Key words used)

स्वप्नद्रष्टा	-	स्वप्न या सपना देखने वाला।
अग्रद्रष्टा	-	भविष्य की ओर सही-सही देखनेवाला।
साइनोमीटर	-	आकाश का नीलापन मापनेवाला यंत्र।
कॉस्मोग्राफी	-	विश्व का भौतिक वर्णन करनेवाला विषय।
यूरानोग्राफी	-	वर्णनात्मक खगोल विज्ञान, जिसमें ब्रह्माण्ड के विभिन्न पिंडों का अध्ययन किया जाता है।
अर्डकुण्डे (Erdkunde)	-	पृथ्वी का विज्ञान अर्थात् भौतिक भूगोल।
समताप रेखा	-	समान तापमान वाले स्थानों को (भूतल पर) मिलानेवाली काल्पनिक रेखा।